पिछले चार महीनों में टोंक व उदयपुर जिले के दस कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में अनेक नवाचार हो रहे हैं। इनमें बहुत लोग जुड़े हैं। लड़कियाँ तो केन्द्र में हैं ही – पर शिक्षिकाएँ, सर्वशिक्षा अभियान के साथी व संधान संस्था यूनीसेफ के सहयोग से के.जी.बी.वी. को एक जीवंत, गुणवत्ता पूर्ण शैक्षिक योजना बनाने में जुटे हैं।

'बात–चीत' का यह पहला अंक इन सभी प्रक्रिया को मजबूत बनाने का प्रयास है। इसके द्वारा कार्य के दौरान आए हुए अनुभव व उनसे उपजी ऊर्जा को बाँटने की कोशिश है, जो ज्यादा से ज्यादा साथियों को जोड़े, उत्साहित करे और नई दिशाओं की ओर ले जाए।

'बात–चीत' चलती रहे इसी आशा से –
संपादक, 'बात–चीत'

सीखना–सिखाना

दो लड़कियों की बातचीत

सीता – मैने कुत्ते को सीटी बजाना सिखा दिया है।
अमीना – पर मैने तो उसे सीटी बजाते नहीं देखा!
सीता – मैं तो कह रही हूँ कि मैने सिखाया है, यह कब कहा कि उसने सीख लिया।

सीखने–सिखाने के बीच की खाई के अन्तर का हमें अंदाज नहीं होता।

पिकनिक में शिक्षा

KGBV मावली के पुराने भवन के पीछे गन्ने के खेत हैं। यह गन्ने की कटाई का वक्त था। एक वृद्ध किसान के आग्रह पर लड़कियाँ, टीचर्स तथा संधान के साथी खेत पर गए। एक तरफ किसान बैलों को हाँक रहा था। बैल रस निकालने वाली मशीन चला रहे थे। किसान की पत्नी एक तरफ मशीन में गन्ना डाल रही थी और दूसरी तरफ रस मटके में भर रहा था। पास में ही भट्टी पर रखी बड़ी कढ़ाही में गर्मागरम गुड़ बन रहा था। गुड़ बनाने में किसान का बेटा लगा था। लड़कियों ने गन्ने से रस बनने की पूरी प्रक्रिया को देखा। मटका भर जाने पर किसान ने सब को छक कर रस पिलाया। लड़कियाँ बहुत आनंदित हो रही थीं। उन्होनें किसान को गीत भी सुनाए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कट्टी–अब्बा

उसका नाम आरती था और मेरा पार्वती। यह बात तब की है जब हम दोनों सातवीं कक्षा में पढ़ती थी, गाँव में हाईस्कूल न होने के कारण हम कस्बे के हाईस्कूल में पढ़ने जाते थे। रास्ते में घना जंगल पड़ता था। हम दोनों सहेली थी मगर स्वभाव में एकदम अलग–अलग। आरती भोली और शर्मीली होते हुए भी बहादुर व निडर थी। पढ़ने में भी तेज। इसके विपरीत मैं वाचाल, डरपोक और गुस्सैल। सहेलियों की थोड़ी सी मजाक भी मुझे सहन नहीं हो पाती थी। इसी कारण अक्सर किसी न किसी से मेरी कट्टी रहती।

एक बार आरती से भी मेरी कट्टी हो गई, बहुत ही छोटी सी बात पर। हुआ यों कि एक दिन मैं स्कूल में पेन लाना भूल गई। मैने आरती से पेन माँगा लेकिन लौटाना भूल गई। तब आरती ने मुझ पर पेन चोरी का आरोप लगा दिया। इस आरोप से मैं तिलमिला कर बोली, ठीक है मैने तेरा पेन चुराया है यह कहकर पेन उसके मुँह पर दे मारा। तब से हम दोनों की बातचीत बन्द होगई। पहले लड़कियों व फिर शिक्षिका ने भी प्रयास किया मगर हमारी अब्बा नहीं हो पाई।

स्कूल से गाँव आते–जाते भी अब हम आगे–पीछे चुपचाप चलते थे मगर एक दिन घने जंगल से गुजरते समय झाड़ियों से आने वाली सर सराहट से मैं काँप उठी। लगा, जरूर वहाँ बाघ ने कोई जानवर पकड़ लिया है और वो छुटने का प्रयास कर रहा है। डर के मारे मैं पसीना–पसीना हो गई। मैं अचानक पीछे हटी और आरती से चिपक गई। वो मुस्करा रही थी बोली, डर मत पगली, दो जानवर लड़ रहे हैं चलो हम पेड़ पर चढ़ जाते है। मगर मुझे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता आरती ने ढाँढ़स बंधाया और एक पेड़ के नीचे ले जाकर स्वयं नीचे बैठ गई। अपने कन्धें का सहारा देकर मुझे पेड़ पर चढ़ा दिया, तभी झाड़ियों से दो लोमड़ियाँ एक–दूसरी का पीछा करते हुए भागी। तब मैं रोते हुए बोली, आरती तुम ना होती तो आज मैं डर से मर ही जाती। फिर हम दोनों एक–दूसरे के गले में बाँहें डाले घर की ओर बढ़ चली। कोई नहीं समझ पाया कि हमारा अब्बा कब व कैसे हो गया।

साभार : फूलफुलियारी, हेमराज भट्ट

बादल

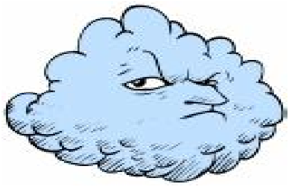

काश अगर हम बादल होते,
उमड़ – घुमड़ के सही समय पर,
बिना बुलाए हम आ जाते।
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
दसों दिशाओं में छा जाते
काश अगर हम बादल होते।

पायल कुमारी
धोल की पाटी

कविता

गली – गली में मचा शोर,
छत पर बैठा है एक मोर।
पकड़ो – पकड़ो जाल बिछाओ,
बच्चों बोलो जोर – जोर।

निरमा मीणा
धोल की पाटी

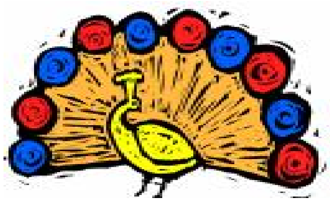

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नाटक: ये तो बढ़िया आईडिया है।

के.जी.बी.वी. मालपुरा की लड़कियों ने 28 अक्टूबर– 09 को रात्रि सत्र में **पानी का संकट** मुद्दे पर नाटक प्रस्तुत किया। इस नाटक में सरपंच द्वारा ग्राम पंचायत की बैठक बुलवायी गई। बैठक में गाँव के महिला–पुरूष सभी शामिल हुए। लड़कियों ने पानी पर संवाद को कुछ इस तरह दर्शाया –

सोनिया (कन्हैयालाल की भूमिका में) :– भाई, पहले तो नाली में पानी भरा रहता था। जानवर भी आराम से पानी पी लेत थे पर क्या करें। अब तो कुओं में ही पानी नहीं रहा।

निरमा (सूखाराम की भूमिका में) :– क्या करें सरपंच साहब ? **ढ़ोरों को खुला ही छोड़ दें क्या?**

प्रियंका (विमला की भूमिका में) :– पानी आदमियों के लिए ही नहीं है तो जानवरों के लिए कहां से लाएँ

सुचेता (सरपंच की भूमिका में) :– भाई पानी की तो बड़ी समस्या है पर करना क्या है ये बताओ ?

पूजा (गुलाबो की भूमिका में) :– मेरा तो यह कहना है कि हम सब मिलकर एक पक्का तालाब बना लें। ताकि बरसात के पानी को इकठ्ठा कर सकें।

कोरस :– हाँ–हाँ ये तो बढ़िया आइडिया है। यह काम तो जरूर हो सकता है।

सरपंच :– मैं कल ही नरेगा वाले साहब से मिलूंगी गाँव में तालाब भी बन जायेगा और लोगों को काम भी मिल जायेगा।

गांव के सभी लोग खुश हो जाते हैं। कुछ दिन में ही तालाब की खुदाई शुरू हो जाती है।

पढ़ाई क्यों छूटी

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय सिरोही की छात्राओं से हमने पूछा कि जब आपकी पढ़ाई छूट गई तब आपने पढ़ाई जारी रखने या KGBV में आने के लिए क्या–क्या प्रयास किए।

सुनीता शर्मा – मम्मी पढ़ाना नहीं चाहती थी और मेरी पढ़ाई छुड़वा दी। मैं पढ़ना चाहती थी। मैं सोचती थी कि शायद मैं कभी नही पढ़ पाऊँगी। दीदी ने मुझे KGBV के बारे में बताया। मैनें दीदी से कहा कि आप मेरे घर आकर मेरी मम्मी से बात करो। दीदी ने घर आकर मम्मी को KGBV के बारे में बताया व समझाने के लिए कहा कि लड़की को पढ़ने भेजो इसका नाम आगे से (सरकार से) आया है। मम्मी मुझे भेजने के लिए राजी हो गई। इस बात से बहुत खुश हूँ कि मैं आज पढ़ रही हूँ।

हंसा गुर्जर :– मैने दूसरी तक पढ़ाई की थी। मैं पढ़ने में अच्छी थी। लेकिन घर की स्थिति खराब होने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। जब मैं दो तीन साल में ठीक हुई तो सब कुछ भूल गई थी। फिर भी मुझे लगता था कि मैं फिर से पढ़ सकती हूँ। मैने अपनी छोटी बहन से पढ़ना शुरू किया और धीरे–धीरे सीख गई। हमारे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पास पहचान शाला शुरू हुई। मैने वहाँ नाम लिखवाया और जाने लगी। पिताजी ने कहा कि पशुओं की देखभाल में मदद कौन करेगा ? मैने कहा कि पढ़ाई के साथ–साथ भी ये काम कर सकती हूँ। पापा ने कुछ नहीं कहा। मैनें पाँचवी पास कर ली और मैं आगे पढ़ना चाहती थी। मेरी अध्यापिका ने मदद की और मैनें भी पापा से कहा कि मुझे पढ़ने दो, पापा मान गए। लेकिन दादा जी ने मना कर दिया। मेरी अध्यापिका ने दादा जी को KGBV के बारे में बताया और दादा जी मान गए।

हर बात का एक मतलब होता है।

पीपलू KGBV कक्षा 7 की लड़कियों से मिला। मैनें नमस्ते किया और अपना नाम भी बताया। मेरे कहने पर लड़कियों ने भी बारी–बारी से अपना नाम बताना शुरू किया। मैनें बीच में ही जोड़ा कि, नाम के साथ अपने नाम का मतलब भी बताओ।

मैने अपने नाम

महेश का मतलब बताया। उन्हे याद दिलाया कि आपने सुना है ब्रह्मा, विष्णु और मैं थोड़ा रूका तो लड़कियों ने ही बोल दिया, महेश हाँ, मैने कहा महेश का एक मतलब शंकर भगवान भी होता है। अब लड़कियों को बात तो समझ आगई थी लेकिन वो अपने नाम का मतलब नही बता सकीं। मैने कहा आप सबके नाम का कोई अर्थ या वजह तो है ना! लड़कियों ने सहमति में गर्दन हिलाई। मैनें कहा मैं कल फिर आऊँगा तब तक आप अपने नाम का मतलब किसी से पूछना और मुझे बताना।

अगले दिन मुझे लड़कियों ने अपना नाम और उसका मतलब या वज़ह बताई।

मेरा नाम लक्ष्मी है – लक्ष्मी का मतलब है धन की देवी।

मेरा नाम पुष्पा है – पुष्पा का मतलब है फूल। ऐसे करके लड़कियाँ अपना नाम बता रही थी और उसका मतलब भी। मतलब बताते समय वो ऐसे खुश थी मानो उन्होने कुछ पा लिया हो। लड़कियों ने यह भी बताया कि उन्होने जाना कैसे,

मैडम से पूछकर

चौकीदार बाबा से

अन्य कक्षाओं की लड़कियों से पूछकर। अब कभी भूल तो नहीं जाओगी ?

मैने पूछा। सब एक साथ बोली कभी नही । मैनें पूछा कभी नहीं का मतलब क्या होता है ?

सब जोर से हँसी और कोई एक लड़की बोली कभी नहीं का मतलब कभी नही।

– समन्वयक टोंक

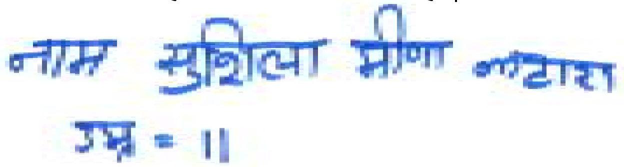

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जंतु से घी तक

कक्षा–6 में शिक्षण करवा रही सहायिका ने हाथ में विज्ञान की पुस्तक लिए लड़कियों से सवाल किया– जंतु क्या होता है ? लड़कियाँ एक–दूसरे की ओर ताकने लगी। शिक्षिका ने सवाल दो–तीन बार दोहराया। मेरी तरफ देखते हुए यह भी कहा गया – सर, कक्षा – 6 में पढ़ती है, जंतु के बारे में भी नही जानती। स्पष्ट समझ आ रहा था वे जंतु शब्द से अपरिचित थी। यहाँ यह भी लग रहा था जंतु समझ में आये या नहीं, जरूरत अभी लिखने पढ़ने की दक्षताओ पर काम करने की है। मैने शिक्षिका से अनुमति लेकर चर्चा को सवाल दर सवाल आगे बढ़ाया।

सवाल – आपके आसपास कौन–कौन से जानवर दिखते हैं ?

लड़कियाँ – गाय, बकरी, भैंस, मोर, तोता

सवाल – इनमें से पालते किस–किस को है ?

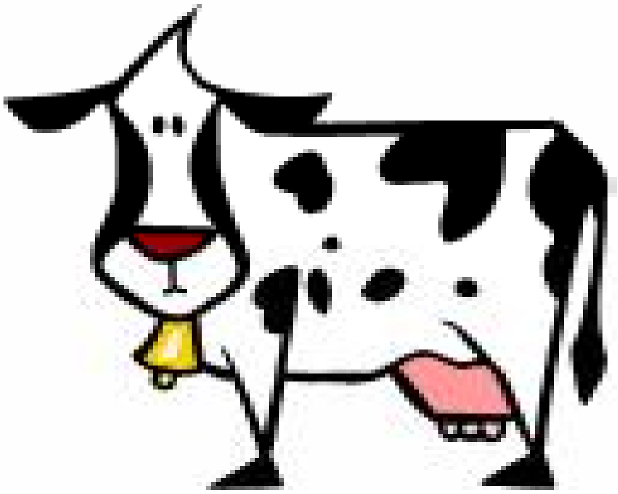

लड़कियाँ – गाय, भैंस, बकरी

सवाल – इन जानवरों को क्यों पालते है ?

लड़कियाँ – दूध मिलता है, गोबर मिलता है।

सवाल – दूध से क्या–क्या बनता है ?

लड़कियाँ – घी, दही, छाछ, बर्फी, मावा।

सवाल – इन में सब से महंगा क्या होता है ?

लड़कियाँ – घी।

घी शब्द को बोर्ड पर लिखते ही कुछ लड़कियों ने घी व लड़कियां समझने के बावजूद पढ़ नहीं पाई। इस पर साफ दिखा कि मात्रा पढ़ने व लिखने में अधिकांश लड़कियों को दिक्कत आं रही थी। इस पर आगे काम करना जरूरी लगा!

कंकू नाम से अनुस्वार की पहचान

नई लड़कियों की कॉपी देखने पर लगा वे अनुस्वार वाले शब्द नहीं लिख पा रही है। उच्चारण भी ठीक नहीं है। सबको अपने–अपने नाम बोर्ड पर व्यक्तिशः आकर लिखने को कहा गया। नामों की सूची मे कंकू नाम भी था। दो–तीन लड़कियों से कंकू नाम पूछा गया। लड़कियों ने कंकू नाम आसानी से बता दिया। कंकू शब्द के साथ मंगू, गंगू, कंस, टिंकू शब्द लिखे गये। लड़कियाँ झट से उक्त शब्दों को पढ़ने लगी। लड़कियों की सहभागिता से महसूस हुआ अनुस्वार की समस्या हल हो गई है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आखिर बदल ही गया !

मावली में KGBV का प्रारम्भ अप्रेल, 2007 से हुआ । तभी से यह विद्यालय गैराजनुमा अंधेरे बंद भवन में चल रहा था । दीपावली अवकाश के बाद सभी नए भवन में आ गए। ऐसा ही सेमारी में भी हुआ । इससे लड़कियों के साथ ही शिक्षिकायें भी खुश नज़र आई । अब पढ़ने व रहने के कमरे अलग–अलग हैं । बड़ा मैदान और अन्य सुविधायें भी हैं । आखिर नज़ारा बदल ही गया।

गणित सीखना सीढ़ी चढ़ने जैसा है

कक्षा 7 में 13 बालिकाएं लाईन से बैठी हैं। चक्रवृद्धि ब्याज का पाठ चल रहा है। शिक्षिका ने बहुत अच्छे ढंग से श्यामपट्ट पर सवाल हल करने का सूत्र लिखा । श्यामपट्ट पर एक सवाल हल करवाया। इसके बाद बालिकाओं को प्रश्नावली के प्रश्न हल करने को दिये। बालिकाएं एक–दूसरे का चेहरा देख रही थी। शिक्षिका कह रही थी, मैं बहुत मेहनत करती हूँ पता नहीं इनको क्यों समझ नहीं आता। पीछे बैठी बालिकाओं से पुस्तक में दिए मूलधन पढ़ने को कहा यह बालिका नहीं पढ़ पाई, पडौस में बैठी दूसरी बालिका को पढ़ने को कहा वह भी नहीं पढ़ पाई । समझ आ रहा था, बीमारी दूसरी जगह है।

श्यामपट्ट पर दो व तीन अंक की बीस संख्याएँ लिख दी । एक–एक लड़की श्यामपट्ट पर आए, एक दो अंक की व एक तीन अंक की संख्या काटते हुए संख्या बोले । दो अंक की संख्या तो सभी ने पढ़ दी पर तीन अंक की संख्या को तीन लड़कियां नहीं पढ़ पाईं । चार लड़कियों ने अटक–अटक कर आसानी से पढ़ दिया । खेल को बढ़ाया तो पता लगा कि लाख तक की संख्या केवल दो लड़कियॉं पढ़ पाई ।

स्थानीयमान चार्ट की मदद से तीन अंक की संख्या से शुरूआत हुई। बात आगे बढ़ी हजार, दस हजार, हजार व दस हजार को हजार का घर, हजार के घर में नौ से ज्यादा संख्या आते ही दस हजार के घर में जाएंगे । इसका अभ्यास करवाया। इसी तरह लाख व दस लाख पर काम हुआ । इस बीच कक्षा 6 में पढ़ाने वाली शिक्षिका भी इस कक्षा में आ गई । उसने कहा सर, यह काम मुझे कक्षा 6 में भी करना पड़ेगा । लड़कियों को संख्याओं एवं इनके घर के खेल में मज़ा आ रहा था ।

शिक्षिकाओं से बात हुई तो उन्होंने कहा गणित विषय तो सीढ़ी चढ़ने जैसा है। एक सीढ़ी चढ़ने के बाद ही दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा जा सकता है। हमको समझ आ रहा है कि सबसे पहले संख्या व संक्रियाओं ;जोड़, बाकी, गुणा, भाग, पर मज़बूती से काम करना पड़ेगा । आगामी सात दिनों में हम पक्की तौर पर यह काम कर लेंगी ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आओ जाने
कचरे की कहानी

रसोई से, खाना खाने के बाद, पेन्सिल छीलकर, पेपर फाड़कर, प्लास्टिक के क्लीप, पुरानी डब्बियाँ हम फेंकते हैं। कभी तो हम इन्हे कचरा पात्र में फेंकते हैं और कभी यूँही जहाँ तहाँ इनका क्या होता है ? कभी इनके बारे में सोचा ?

कचरा अपने आप में संसाधन है। इन के बारे में जानकर इनका फिर से उपयोग कर सकते हैं ।

सब्जी, फलों के अवशेष – छिलके, खाने की चीज़ें रोटी के टुकड़े, प्रकृति में अपने आप मिट्टी मे मिल जाते हैं, पर इस प्रक्रिया में समय लगता है। इन सब की खाद् भी बन सकती है। **इन्हे बायोडिग्रेडेबल कचरा** कहते हैं।

कॉच, टिन, प्लास्टिक – यह सब मिट्टी मे नहीं मिलते है। इन्हें **नॉन डिग्रेडेबल कचरा** कहते हैं। ऐसे कचरें भी होते हैं जो हानिकारक होते हैं – जैसे बल्ब, पुरानी बैटरी, पुरानी दवाईयाँ, इत्यादि। यह भी नॉन डिग्रेडेबल होते हैं।

कई कचरों को हम फिर से काम में ले सकते हैं – पेपर, कपड़ा, फटे पुराने ड्रेस इत्यादि।

आओ देखें –

हमारे स्कूल के कचरे का हम क्या कर सकते हैं ?

1. स्कूल और छात्रावास में किस तरह का कचरा निकलता है ? पेपर, गत्ते, प्लास्टिक के डब्बे, खाना, काँच, टिन, पुरानी बल्ब, बैटरी, पुरानी दवाईयाँ। आप याद करके बताएँ।

2. हम देखें कि कचरा कहाँ–कहाँ ज्यादा होता है ? रसोई घर के पास, जहाँ बर्तन धोते हैं, टॉयलेट के पास, जहाँ हम रहते है, कक्षा कक्ष में।

हम इन जगहों पर कचरा पात्र रख सकते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

3. हम कचरे को अलग–अलग पात्र में डाल सकते हैं – जैसे

सब्जी फल के छिलके

खाना का अवशेष, रोटी के टुकड़े

पेपर, पुराने कपड़े

बैटरी बल्ब, पुरानी दवाईयाँ, कांच इत्यादि

माहवारी के कपड़े/पैड

4. सब्जी, फलों के छिलकों को जमीन में गड्ढ़ा बनाकर डाल दें, ऊपर से मिट्टी की परत डाल दें। सूरज की किरणें और मिट्टी के अन्दर की नमी से धरती में मिलकर खाद बन जाएगी। पर इसमें 8 से 12 सप्ताह का समय लगता है। वैसे खाद बनाने के और तरीके भी हैं।

5. खाने के अवशेष, रोटी के टुकडो का क्या करें ?
इन को हम व्यवस्थित तरीके से जानवरों के खाने के लिए रख सकते हैं। परन्तु जानवर गन्दगी भी फैला देते है। खाने के अवशेष, रोटी के टुकड़ों को भी गाढ़कर खाद बनाया जा सकता है।

6. पेपर, पुराने कपड़े से हम फिर कुछ बना सकते हैं – आप सोचें क्या–क्या बन सकता है।

7. माहवारी के कपड़े, पैड, पुरानी दवाईयों की गोलियाँ – इन का क्या करें ?
इन सबको एक गड्ढ़ा बनाकर डालें एवं जला दें, पुरानी दवाई की गोलियों को जला दें या चूरा करके जमीन में गाढ़ दें।

8. काँच की बोतलें, प्लास्टिक का क्या करें ?
काँच की बोतल व प्लास्टिक, धातु कबाड़ी वाले को दें।

KGBV में क्या हम ऐसे कर सकते है – जिससे हमारे विद्यालय में एवं उसके आसपास गंदगी नहीं दिखे ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com